Shri Sitarama Ashtakam

श्रीसीतारामाष्टकम्

Document Information

Text title : sItArAmAShTakam

File name : siitaaraama8.itx

Category : aShTaka, raama

Location : doc_raama

Author : achyutayati

Transliterated by : http://www.webdunia.com

Proofread by : Kirk Wortman kirkwort at hotmail.com

Latest update : January 13, 2002

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 29, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीसीतारामाष्टकम्

ब्रह्ममहेन्द्रसुरेन्द्रमरुद्गणरुद्रमुनीन्द्रगणैरतिरम्यं
क्षीरसरित्पतितीरमुपेत्य नुतं हि सतामवितारमुदारम् ।
भूमिभरप्रशमार्थमथ प्रथितप्रकटीकृतचिद्घनमूर्तिं
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ १॥

पद्मदलायतलोचन हे रघुवंशविभूषण देव दयालो
निर्मलनीरदनीलतनोऽखिललोकहृदम्बुजभासक भानो ।
कोमलगात्र पवित्रपदाब्जरजःकणपावित गौतमकान्त
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ २॥

पूर्ण परात्पर पालय मामतिदीनमनाथमनन्तसुखाब्धे
प्रावृडदभ्रतडित्सुमनोहरपीतवराम्बर राम नमस्ते ।
कामविभञ्जन कान्ततरानन काञ्चनभूषण रत्नकिरीट
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ३॥

दिव्यशरच्छशिकान्तिहरोज्ज्वलमौक्तिकमालविशालसुमौले
कोटिरविप्रभ चारुचरित्रपवित्र विचित्रधनुःशरपाणे ।
चण्डमहाभुजदण्डविखण्डितराक्षसराजमहागजदण्डं
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ४॥

दोषविहिंस्रभुजङ्गसहस्रसुरोषमहानलकीलकलापे
जन्मजरामरणोर्मिमये मदमन्मथनक्रविचक्रभवाब्धौ ।
दुःखनिधौ च चिरं पतितं कृपयाद्य समुद्धर राम ततो माम्
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ५॥

संसृतिघोरमदोत्कटकुञ्जरतृड्बुदनीरदपिण्डिततुण्डं
दण्डकरोन्मथितं च रजस्तम उन्मदमोहपदोज्झितमार्तम् ।
दीनमनन्यगतिं कृपणं शरणागतमाशु विमोचय मूढम्
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ६॥

जन्मशतार्जितपापसमन्वितहृत्कमले पतिते पशुकल्पे
हे रघुवीर महारणधीर दयां कुरु मय्यतिमन्दमनीषे ।
त्वं जननी भगिनी च पिता मम तावदसि त्ववितापि कृपालो
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ७॥

त्वां तु दयालुमकिञ्चनवत्सलमुत्पलहारमपारमुदारं राम
विहाय कमन्यमनामयमीश जनं शरणं ननु यायाम् ।
त्वत्पदपद्ममतः श्रितमेव मुदा खलु देव सदाव ससीत
त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाघन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ८॥

यः करुणामृतसिन्धुरनाथजनोत्तमबन्धुरजोत्तमकारी
भक्तभयोर्मिभवाब्धितरिः सरयूतटिनीतटचारुविहारी ।
तस्य रघुप्रवरस्य निरन्तरमष्टकमेतदनिष्टहरं वै यस्तु
पठेदमरः स नरो लभतेऽच्युतरामपदाम्बुजदास्यम् ॥ ९॥

॥ इति श्रीमन्मधुसूदनाश्रमशिष्याच्युतयतिविरचितं
श्रीसीतारामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Shri Sitarama Ashtakam

pdf was typeset on September 29, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*